पैकिंग कवर (रैपर) और पढ़ना-लिखना

श्रीदेवी

भाषा सीखना अधिकांशतः एक सहज प्रक्रिया है। बच्चे पढ़ना-लिखना भी सहज रूप से सीख सकते हैं यदि उन्हें पढ़ने-लिखने का सहज वातावरण मिले। बच्चे अपने आसपास उपलब्ध सामग्री को जानते हैं और उसका बारीक़ अवलोकन भी उनके पास रहता है। लेखिका ने बच्चों की इस क्षमता को पहचाना। उन्होंने बच्चे के आसपास आसानी से उपलब्ध सामग्री; खाद्य सामग्री और अन्य वस्तुओं के रैपर का पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए अर्थपूर्ण उपयोग किया। लेख में लेखिका ने अपने द्वारा किए गए इस काम के अनुभव साझा किए हैं। सं.

शहरी सरकारी विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की कई अलग तरह की चुनौतियाँ होती हैं। इनमें व्यवस्थागत और बच्चे के परिवेश सम्बन्धित चुनौतियाँ भी शामिल हैं। बाज़ार जिस सघनता के साथ शहरी बच्चों के जीवन में हैं, तुलनात्मक रूप से ग्रामीण बच्चों के जीवन में कम हैं। बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने को लेकर आमतौर पर हर विद्यालय के शिक्षक चिन्तित ही रहते हैं। कार्यशालाओं के दौरान शिक्षकों के साथ हुई बातचीत से पता चलता है कि हर शिक्षक के पास चार-पाँच और कुछ के पास इससे ज़्यादा संख्या में ऐसे बच्चे रहते हैं जो पढ़ने-लिखने में कक्षा के अन्य साथियों की तुलना में पिछड़े होते हैं। हर शिक्षक को लगता है मेरी ही कक्षा के जो बच्चे नहीं सीख पाए हैं, इन्हें सिखाने के लिए कुछ तरीक़े जान पाऊँ या उनका उपयोग करूँ। सीखने के सन्दर्भ में विचार करें तो हम ये तो जानते हैं कि किस उम्र के बच्चों के सीखने के क्या चरण होते हैं और अब हम इस बात से भी अच्छी तरह वाकिफ़ हैं कि बच्चों के सीखने में उनके परिचित सन्दर्भों की भूमिका केन्द्र में होती है। कक्षा में इन सन्दर्भों के इर्द-गिर्द शिक्षण की प्रक्रिया कैसे कराएँ, इसपर भी विचार करना ज़रूरी है।

हम सब यह भी समझते हैं कि कभी भी कोई एक संसाधन किसी कौशल को (विशेषकर पढ़ना-लिखना) सीखने का एक मात्र समृद्ध स्रोत नहीं हो सकता। इसलिए पढ़ना-लिखना सिखाते समय शिक्षक को भी पाठ्यपुस्तक की आस्था से थोड़ा आगे बढ़ना होता है। रायपुर शहर के एक प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका ने कक्षा दूसरी के बच्चों के साथ ऐसा ही एक प्रयोग अपनी कक्षा में किया है। उनकी कक्षा में चार बच्चे ऐसे थे जिन्हें पढ़ने में बहुत मुश्किल होती थी। उनके लिए कुछ तरीक़ों पर विचार करते हुए जिन वस्तुओं का बच्चे घर में उपयोग करते हैं उनपर कक्षा में चर्चा की और लिखने की गतिविधियाँ आयोजित कीं जो बच्चों के लिए एक नए तरह का अनुभव रहा।

पहले दिन शिक्षिका ने बच्चों को कुछ रैपर दिखाए और पूछा कि ये क्या हैं? तीन-चार बच्चों ने बताया कि इसमें नमक मिलता है। एक

ने कहा, इसमें दही मिलता है। और बच्चों ने बहुत सारे रैपर उठाकर यह बताया कि किसमें क्या मिलता है। बच्चों के द्वारा बताई जा रही वस्तुओं को शिक्षिका ने दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया। और इसी तरह से चार्ट पर रैपर को चिपकाया और कक्षा में लगा दिया।

ऐसी वस्तुएँ जिन्हें खा सकते हैं।	ऐसी चीजें जिन्हें नहीं खा सकते हैं।
नमक	अगरबत्ती
पापड़	साबुन
जीरा	माचिस
दही	शैम्पू
सोन पापड़ी	

अगले दिन शिक्षिका ने बच्चों से पूछा, कल हम क्या कर रहे थे? बच्चों ने पहले दिन की पूरी कक्षागत गतिविधि बताई, जिसे एक-दो वाक्यों में बोर्ड पर लिख दिया। आज हम एक-एक चीज़, जिसका नाम लिखा था, के बारे में बताएँगे और उन्हें लिखेंगे। सबसे पहले उन्होंने नमक का रैपर उठाया। उसपर बच्चों से बातचीत शुरू की। शिक्षिका जैसे-जैसे प्रश्न पूछतीं, बच्चे जवाब देते जाते।

शिक्षिका : ये किस चीज़ का रैपर है?

बच्चे : ये नमक का पैकेट है।

शिक्षिका : अच्छा, थोड़ा सोचो कि रैपर और पैकेट में क्या अन्तर है?

बच्चे चुप रहे।

शिक्षिका : जब दुकान जाते हो तो दुकान वाले से क्या बोलते हो? मुझे नमक का रैपर देना या नमक का पैकेट देना?

बच्चे : मुझे नमक का पैकेट देना।

शिक्षिका : रैपर क्यों नहीं माँगते हो?

बच्चे : क्योंकि पैकेट में सामान भरा होता है, रैपर में सामान नहीं होता।

शिक्षिका : अभी जो मैं पकड़ी हूँ वह क्या है– नमक का पैकेट या नमक का रैपर?



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

बच्चे : नमक का रैपर।

इस बार शिक्षिका ने बच्चों से नमक के उपयोग आदि पर बातचीत की। इसे बोर्ड पर लिखा और बच्चों को पढ़ने के लिए बुलाया। इसी तरह उन्होंने दो-तीन वस्तुओं के बारे में चर्चा कर उस बातचीत को बोर्ड पर लिखा और बच्चों के साथ पढ़ने पर काम किया। कुछ और रैपर बच्चों को दिए और उन्हें चार्ट पेपर पर लिखने के लिए कहा। बच्चों के द्वारा जो कुछ भी लिखा गया उसे कक्षा की दीवारों पर लगाया गया।

बच्चों के साथ इस पूरे काम को करने के दौरान शिक्षिका के बड़े रोचक अनुभव रहे। रैपर मँगाने पर बहुत-से बच्चे सिगरेट और गुटखे के रैपर लेकर आए। इनपर बच्चों से बात की और सेवन से स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव बताए।

इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षिका ने बच्चों को उनके जीवन से जुड़ी वस्तुओं को केन्द्र में रखकर बातचीत को आगे बढ़ाया। यही उनके पढ़ना और लिखना सीखने का आधार भी बनी। कक्षा में इस प्रक्रिया को करने के कारण कुछ उन बच्चों की, जो पाठ्यपुस्तक पढ़ाने के दौरान रुचि नहीं लेते थे, पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया में सहभागिता बढ़ी है। वे दो बच्चे भी, जो विद्यालय नहीं आते थे, अब थोड़ा नियमित रूप से स्कूल आ रहे हैं।

बातें जिन्हें हमें (शिक्षक को) समझना चाहिए :

- बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखना हमें एक विशेष काम लगता है लेकिन काफ़ी सहज बन सकता है।
- पढ़ने-लिखने के लिए हर बार किताब खोलना ज़रूरी नहीं है।
- वे जिन वस्तुओं का रोज़ उपयोग करते हैं उनके बारे में उनके अनुभव इस पढ़ने-लिखने को सार्थक सन्दर्भ प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें पढ़ना-लिखना सीखने में मदद मिलती है।
- जो बच्चे पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाए हैं उनके लिए इसे वैकल्पिक तरीक़े के रूप में भी देखा जा सकता है।

इस पूरे काम को करने के दौरान कुछ प्राप्तियाँ भी रही हैं :

- रैपरों के माध्यम से पढ़ना-लिखना सिखाने के प्रयास में बच्चों ने विशेष रुचि दिखाई।
- घर में उपयोग किए जाने वाले रैपरों पर बच्चों ने अधिक जानकारी साझा की।
- बच्चे जिन वस्तुओं का उपयोग अपने दैनिक जीवन में करते थे उनके बारे में लिखना उनके लिए नया अनुभव रहा।
- एक ही वस्तु के बारे में सब बच्चों ने अलग-अलग तरह की बातें साझा कीं।
- इस पूरे काम के दौरान बच्चों ने बहुत सारा काम ख़ुद से और समूह में कार्य किया।

इस पूरे काम को करने के बाद यह समझ पाई कि :

बच्चों को कुछ सिखाना बहुत आसान नहीं है। इसपर लगातार विचार करते रहना पड़ता है। आज के काम की कल के काम से निरन्तरता देखनी पड़ती है। कुछ करने के बाद उनके चेहरों पर एक मुस्कान दिखती है, जिसने मेरे काम को भी सार्थक बनाया है।

श्रीदेवी ने पण्डित रविशंकर शुक्ल महाविद्यालय से साहित्य और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। पिछले पन्द्रह वर्षों से प्राथमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। प्रमुख रूप से शिक्षक-शिक्षा, बाल साहित्य, और प्रारम्भिक साक्षरता में रुचि है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रायपुर छत्तीसगढ़ कार्यरत है।

सम्पर्क : sreedevi@azimpremjifoundation.org